क्या एक हत्यारा उस व्यक्ति के पाप अपने ऊपर लेता है जिसे
उसने मारा?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

उत्तर:

नहीं, यह एक गलतफहमी है कि हत्यारा उस व्यक्ति के सारे पाप अपने ऊपर ले लेता है जिसे उसने मारा। बाइबिल और धर्मशास्त्र के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन, चुनाव और पापों के लिए परमेश्वर के सामने जिम्मेदार होता है। हत्या एक गंभीर पाप है और इसके लिए कड़ी सज़ा होती है, लेकिन इससे मृतक की दोष या आध्यात्मिक स्थिति हत्यारे पर नहीं आती।

1. पाप के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी
बाइबिल स्पष्ट रूप से कहती है कि हर व्यक्ति अपने पाप के लिए जिम्मेदार है। यह पुराने और नए नियम दोनों में एक मूल सिद्धांत है।

गलातियों 6:5
“क्योंकि हर कोई अपनी-अपनी बोझ उठाएगा।”

यशायाह 18:20
“जो आत्मा पाप करेगी, वह मरेगी। पुत्र पिता के पाप का भार
नहीं उठाएगा, और न पिता पुत्र के पाप का। धर्मी का धर्मीपन

क्या एक हत्यारा उस व्यक्ति के पाप अपने ऊपर लेता है जिसे
उसने मारा?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

उसी पर रहेगा, और दुष्ट का दुष्टता उसी पर।”

चाहे कोई व्यक्ति प्राकृतिक मौत मरे, दुर्घटना में मरे, या हत्या का शिकार हो, वह उस आध्यात्मिक स्थिति में मरेगा जिसमें उसने जीवन में रहा। यदि वे बिना पश्चाताप और मसीह के पाप में मरते हैं, तो उनकी नियति तय हो जाती है, चाहे मौत किसी भी कारण से हुई हो। मृत्यु आत्मा को शुद्ध नहीं करती। केवल यीशु का रक्त ऐसा कर सकता है (इब्रानियों 9:14)।

2. हत्यारे की दोष केवल हत्या के लिए होती है
हत्यारे को निर्दोष रक्त बहाने के पाप के लिए न्याय मिलेगा। यह परमेश्वर के सामने गंभीर पाप है और वह इसे नफरत करता है (नीतिवचन 6:16–17)। लेकिन परमेश्वर मृतक के व्यक्तिगत पापों के लिए उनसे जवाब नहीं मांगेगा।

परमेश्वर का न्याय मानव विरासत नियमों जैसा नहीं है—पाप हिंसा या मृत्यु के जरिए हस्तांतरित नहीं होता। हत्यारा अपने नैतिक अपराध का दोषी है, मृतक के जीवन इतिहास या आध्यात्मिक स्थिति का नहीं।

3. “किसी के रक्त का दोषी” होने का क्या अर्थ है?
एक ही संदर्भ है जहाँ शास्त्र “किसी के रक्त का दोषी” होने की

क्या एक हत्यारा उस व्यक्ति के पाप अपने ऊपर लेता है जिसे
उसने मारा?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

बात करता है, और वह हत्या के कारण नहीं बल्कि आध्यात्मिक खतरे के सामने चुप रहने के कारण है।

यशायाह 3:18
“जब मैं दुष्ट से कहता हूँ, ‘तुम निश्चित रूप से मरोगे,’ और
तुम उसे चेतावनी नहीं देते… वह दुष्ट अपने पाप में मरेगा,
पर उसका रक्त मैं तुम्हारे हाथ से मांगूंगा।”

इस पद में परमेश्वर निगरानी करने वाले को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं, व्यक्ति के पाप के लिए नहीं, बल्कि चेतावनी न देने के लिए। इसे सामूहिक जिम्मेदारी के रूप में जाना जाता है—हम, विश्वासी, पाप और आने वाले न्याय के बारे में दूसरों को चेतावनी देने के लिए जिम्मेदार हैं। यदि हम ऐसा नहीं करते, तो इसका आध्यात्मिक परिणाम हमें भुगतना पड़ सकता है।

यह सिद्धांत प्रेरित पौलुस भी कहते हैं:

प्रेरितों के काम 20:26–27
“इसलिए मैं आज तुम लोगों के सामने गवाही देता हूँ कि मैं सभी मनुष्यों के रक्त में निर्दोष हूँ, क्योंकि मैंने तुम्हें परमेश्वर की पूरी योजना बताने से कोई कसर नहीं छोड़ी।”

क्या एक हत्यारा उस व्यक्ति के पाप अपने ऊपर लेता है जिसे
उसने मारा?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

पौलुस कह रहे हैं कि उन्होंने सच्चाई को पूरी निष्ठा से बताया, इसलिए कोई उन्हें बचाव का अवसर छिपाने का दोष नहीं दे सकता। उन्होंने अपनी आध्यात्मिक जिम्मेदारी पूरी की और इसलिए वे दोषमुक्त हैं।

4. व्यावहारिक उदाहरण: ऋण और कानूनी जिम्मेदारी
ऐसे समझिए: यदि कोई मारा जाता है, तो हत्यारा मृतक के ऋणों का उत्तराधिकारी नहीं होता। उसे हत्या के लिए दंडित किया जाता है, मृतक के वित्तीय दायित्वों के लिए नहीं। इसी तरह, आध्यात्मिक ऋण (पाप) मृतक से हत्यारे को हस्तांतरित नहीं होते। हर व्यक्ति अपने जीवन के लिए परमेश्वर के सामने खड़ा है।

5. उद्धार पाने वालों की जिम्मेदारी
यदि आप उद्धार पाए हैं, तो यह आपकी दिव्य जिम्मेदारी है कि आप सुसमाचार दूसरों तक पहुँचाएं। हर कोई प्रवक्ता नहीं होता, लेकिन सभी विश्वासियों को गवाह बनने के लिए बुलाया गया है (प्रेरितों के काम 1:8)। मिशन का समर्थन करना, धर्मशास्त्र साझा करना, उदाहरण के तौर पर जीना और परमेश्वर के काम में योगदान देना, ये सभी तरीके हैं जिससे हम सुसमाचार पहुंचा सकते हैं।

जब हम इस पुकार की अनदेखी करते हैं और लोग पाप में मर जाते हैं

क्या एक हत्यारा उस व्यक्ति के पाप अपने ऊपर लेता है जिसे
उसने मारा?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

बिना कभी सत्य सुने, तो हम उनके रक्त के लिए आध्यात्मिक रूप से जिम्मेदार हो सकते हैं। यह इसलिए नहीं कि हम उनके पाप अपने ऊपर लेते हैं, बल्कि इसलिए कि हमने कार्रवाई नहीं की।

निष्कर्ष:
हर कोई परमेश्वर के सामने अपने गुणों या दोषों के लिए खड़ा होता है। हत्या एक गंभीर पाप है, लेकिन यह मृतक के पापों को मिटाती या अपने ऊपर नहीं लेती। हर आत्मा अपने अपने कर्मों के अनुसार न्याय पाती है (प्रकाशितवाक्य 20:12)। विश्वासी के रूप में, हम दूसरों के पापों के लिए जिम्मेदार नहीं हैं, लेकिन हम उस संदेश को पहुँचाने के लिए जिम्मेदार हैं जो उन्हें बचा सकता है।

मरणाथा! (आओ, प्रभु यीशु!)

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp